अन्ना का गुप्त मित्र



योरिको त्सुत्सुई, चित्रांकन: अकीको हयाशी

लेकिन जल्दी ही वह सामान खोलने और फैलावे से बोर हो गयी ,उसे अपने पुराने दोस्तों की याद आने लगी । तभी कुछ अजीब सा होने लगा ,कोई छोटे छोटे गिफ्ट ब कुछ छोटे पत्र एना के लिए छोड़ने लगा. कौन था वह गुप्त दोस्त।

अन्ना का गुप्त मित्र

योरिको तसुतसुई

चित्रांकन: अकीको हयाशी

हिंदी अनुवाद : आरती जैन



अन्ना नए शहर में नए घर में रहने को लेकर बहुत उत्साहित थी। उसे खास तौर पर इस बात की खुशी थी कि वह पहाड़ों के पास रहने वाली थी। लेकिन वह अपने उन दोस्तों को याद करने लगी थी जिन्हें वह पीछे छोड़ आई थी।

फिर भी उसके पास किसी और बात के बारे में सोचने का समय नहीं था, क्योंकि इतने सारे बक्से थे जिन्हें नए घर के अंदर लाया जाना था।





जल्द ही घर का हर कमरा बक्सों से भर गया। अन्ना ने सामान खोलने में मदद करना शुरू किया, लेकिन थोड़ी ही देर में वह ऊब गई और थक गई।

अचानक उसने बहुत हल्की 'टिप-टिप' की आवाज़ सुनी। यह आवाज़ सामने वाले दरवाज़े से आ रही थी।

"मैंने डाकिये को सुना," अन्ना ने कहा।

"मुझे नहीं लगता कि वह डाकिया था," उसकी माँ ने कहा।

"हमने अभी किसी को अपना नया पता बताया ही नहीं है," उसके पिता बोले।

"लेकिन मैंने सच में किसी को सुना," अन्ना ने कहा और देखने चली गई।

सामने के दरवाज़े पर पहुँचकर अन्ना ने देखा कि उसके माँ-पिता सही थे। वहाँ कोई चिट्ठी नहीं थी, लेकिन फर्श पर बैंगनी फूलों का एक छोटा सा सुंदर गुलदस्ता रखा था।



इतने प्यारे फूल वहाँ कैसे आ गए? यह सोचकर अन्ना ने जल्दी से दरवाज़ा खोला कि शायद वह देख सके कि फूल कौन लाया है।लेकिन उसे बाहर केवल एक अनजानी गली दिखाई दी और बहुत से ऐसे लोग दिखे जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था।





अगली सुबह अन्ना की माँ फिर से सामान खोलने लगीं।

“मुझे समझ में नहीं आ रहा कि कल वे बैंगनी फूल हमें किसने दिए होंगे,” उन्होंने कहा।

उसी समय अन्ना ने फिर वही हल्की ‘टिप-टिप’ की आवाज़ सुनी।

अन्ना दौड़कर सामने के दरवाज़े तक पहुँची। इस बार पत्र-पेटी में तीन रजनीगंधा के फूल थे। अन्ना ने उन्हें सावधानी से बाहर निकाला और दरवाज़ा खोला।लेकिन एक बार फिर बाहर वही अनजान लोग थे, जो गली में आ-जा रहे थे।



अगले दिन अन्ना अपनी माँ के साथ बाज़ार गई। नए दुकानों में जाना और अनजान लोगों को देखना उसे बहुत अजीब लग रहा था। वह चाहती थी कि उसके पुराने दोस्त उसके पास होते।

“ज़रा उन शानदार पहाड़ों को देखो,” उसकी माँ ने कहा।

“मुझे पूरा यकीन है कि हमें इस शहर में रहना बहुत अच्छा लगेगा।”

“आपके हिसाब से किसने रजनीगंधा के फूल छोड़े होंगे?” अन्ना ने पूछा।

“शायद वे फूल उस लड़की के लिए थे जो पहले इस घर में रहती थी,” उसकी माँ ने कहा।

“हो सकता है उसके दोस्त नहीं जानते हों कि वह यहाँ से चली गई है।”



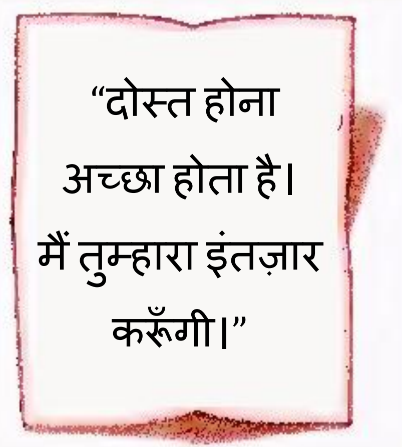


अगले दिन घर लगभग पूरी तरह ठीक हो गया था, लेकिन अन्ना की माँ अब भी व्यस्त थीं। अन्ना ने अपने एक पुराने दोस्त को भेजने के लिए एक चित्र बनाया।

"बिना किसी दोस्त के खेलने में मज़ा नहीं आता," उसने उदासी से कहा।

तभी उसे फिर वही हल्की 'टिप-टिप' की आवाज़ सुनाई दी।

अन्ना दौड़कर पत्र-पेटी के पास पहुँची। इस बार उसमें एक चिट्ठी थी ।लिफ़ाफ़े पर कोई नाम नहीं लिखा था। अंदर एक छोटा सा संदेश था, जो तिरछे अक्षरों में लिखा हुआ था।



अन्ना ने चिट्ठी को बार-बार पढ़ा और सोचा, “यह चिट्ठी तो मेरे ही लिए है।”



अन्ना को अपने नए स्कूल जाना अच्छा लगा। एक दोस्ताना अध्यापिका ने उसे खिलौने दिखाए और पहाड़ों के नीचे उस मैदान के बारे में बताया जहाँ बच्चे कभी-कभी खेलने जाते थे।

अध्यापिका ने कहा, "तुम जल्दी ही बहुत सारे नए दोस्त बना लोगी।"

अन्ना ने खेल के मैदान में बच्चों को हँसते-बोलते देखा। उसे उम्मीद थी कि उन्हीं में से किसी ने उसे चिट्ठी भेजी होगी।





“बैंगनी फूल, रजनीगंधा के फूल एक चिट्ठी ... बैंगनी फूल, रजनीगंधा के फूल एक चिट्ठी...” अन्ना अकेले कंचे खेलते हुए गुनगुना रही थी। उसे किसी के साथ खेलने की बहुत इच्छा हो रही थी।

तभी उसने फिर वही हल्की ‘टिप-टिप’ की आवाज़ सुनी, जो सामने वाले दरवाज़े से आ रही थी।

“रुको! रुको!” अन्ना ने पूरी आवाज़ में चिल्लाते हुए दरवाज़े की ओर दौड़ लगाई।

उसने देखा कि पत्र-पेटी से कुछ बाहर आ रहा है।

वह एक बहुत सुंदर कागज़ की गुड़िया थी।



अन्ना ने गुड़िया को पकड़ा और तुरंत दरवाज़ा खोला। उसने देखा कि एक छोटी लड़की फाटक से बाहर जा रही थी।

“रुको! रुको!” अन्ना ने फिर चिल्लाया।

छोटी लड़की धीरे-धीरे मुड़ी। उसके गाल लाल हो रहे थे।



अन्ना रास्ते पर चलकर उसके पास पहुँची। “वे बैंगनी फूल... क्या वे मेरे लिए थे?” उसने पूछा। छोटी लड़की ने सिर हिलाकर हाँ कहा।

“और... और वह चिट्ठी? क्या वह भी मेरे लिए थी?” अन्ना ने पूछा। छोटी लड़की ने फिर से हाँ में सिर हिलाया।

अन्ना ने अपने हाथ में पकड़ी सुंदर कागज़ की गुड़िया की ओर देखा। सब कुछ उसी के लिए था।

छोटी लड़की ने झिझकते हुए बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “क्या तुम मेरे साथ खेलोगी?”

इस बार अन्ना ने मुस्कराते हुए हाँ में सिर हिलाया।

दोनों लड़कियाँ खुशी-खुशी मुस्कराईं और साथ खेलने चली गईं।





